जादू की किस्मे.

मआरिफुल कुरान/१. मुफ्ती शफी उस्मानी रह.

नोट.- ये PDF कोई भाषा या व्याकरण नही हे,
बल्कि दीन-ए-इस्लाम को समझने के लिये हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

इमाम रागिब अस्फहानी रहमतुल्लाहि अलैहि 'मुफरदातुल-कुरान' मे लिखते हे कि जादू की विभिन्न और अनेक किस्मे हे. एक किस्म तो केवल नज़रबन्दी और ख्याली असर डालना होती हे जिस्की कोई वास्तविक हकीकत नही, जैसे कुछ शोबदे बाज़ (करतब दिखाने वाले) अपने हाथ की चालाकी से ऐसे काम कर लेते हे कि आम लोगो की नज़रे उस्को देखने मे असमर्थ रेहती हे,

या ख्याली कुव्वत मिस्मरेज़म (यानी किसी के जेहन पर असर डालने) वगैरह के ज़रिये किसी के दिमाग पर ऐसा असर डाला जाये कि वो एक चीज़ को आंखो से देखता और मेहसूस करता हे मगर उस्की कोई असली हकीकत नही होती. कभी ये काम शैतानो के असर से भी हो सकता हे कि जादू से पीडित की आंखो और दिमाग पर ऐसा असर डाला जाये जिस्से वो एक गैर-मौजूद और अवास्तविक चीज़ को हकीकत समझने लगे.

कुरान मजीद मे फिरऔनी जादूगरो के जिस जादू का ज़िक्र हे वो पेहली किस्म का जादू था, जैसा कि इरशाद हे तर्जुमा- "उन्होंने लोगो की आंखो पर जादू कर दिया." (७/११६).

और इरशाद हे तर्जुमा- "उन्के जादू से हज़रत मूसा (अल) के ख्याल मे ये आने लगा कि ये रस्सियो के सांप दौड रहे हे." (२०/६६).

इस्मे 'युख़य्यलु' के लफ्ज़ से ये बतला दिया गया कि ये रस्सिया और लाठिया जो जादूगरो ने डाली थी, ना दर हकीकत सांप बनी और ना उन्होंने कोई हरकत की, बल्की हज़रत मूसा (अल) की ख्याली कुव्वत प्रभावित होकर उन्को दौडने वाले सांप समझने लगी.

दूसरी किस्म इस तरह की नजरबन्दी और ख्याली कुव्वत पर असर डालना हे जो कई बार शैतानो के असर से होता हे. जो कुराने करीम के इस इरशाद से मालूम हुवा तर्जुमा- "मे तुम्हे बतलाता हू कि किन लोगो पर शैतान उतरते हे, हर बोहतान बांधने वाले गुनाहगार पर उतरते हे."

और दूसरी जगह इरशाद हे तर्जुमा- "यानी शैतानो ने कुफ्र इखतियार किया, लोगो को जादू सिखाने लगे." (२/१०२).

तीसरी किस्म ये हे कि जादू के ज़रिये एक चीज़ की हकीकत ही बदल जाये, जैसे किसी इन्सान या जानदार को पत्थर या कोई जानवर बना दे.

इमाम रागिब अस्फहानी (रह), अबू बक्र जस्सास (रह) वगैरह हज़रात ने इस्से इन्कार किया हे कि जादू के ज़रिये किसी चीज़ की हकीकत बदल जाये, बल्की जादू का असर सिर्फ ख्याली कुब्बत को प्रभावित करना और नज़रबन्दी तक ही हो सकता हे.

'मोतज़िला' का भी यही कौल हे, मगर जमहूर उलेमा की

तहकीक ये हे कि एक चीज़ की हकीकत बदल जाने मे ना कोई अक्ली बाधक हे ना शरई तौर पर रूकावट. जैसे कोई जिस्म पत्थर बन जाये या एक प्रजाति से दूसरी प्रजाति की तरफ पलट जाये. और फल्सफी हज़रात का जो ये कौल मशहूर हे कि हकीकतो का बदलना मुम्किन नही, उन्की हकीकतो से मुराद 'मुहाल', 'मुम्किन' और 'वाजिब' की हकीकते हे, कि इन्मे इन्किलाब (उलट-फेर) अक्ली तौर पर संभव नही कि कोई 'मुहाल' 'मुम्किन' बन जाये या कोई 'मुम्किन' 'मुहाल' बन जाये. और कुराने पाक मे फिरऔनी जादूगरो के जादू को जो ख्याली असर करार दिया हे उस्से ये लाज़िम नही आता कि हर जादू ख्याली कुव्वत ही को प्रभावित करने वाला हो, इस्से ज़ियादा और कुछ ना हो.

और कुछ हज़रात ने जादू के ज़रिये हकीकत के बदल जाने के जवाज़ (सही और जायज़ होने) पर हज़रत काबे अहबार (रदी.) की उस हदीस से भी दलील पकडी हे जो मुवत्ता इमाम मालिक मे हज़रत कअका बिन हकीम की रिवायत से मन्कूल हे - "अगर ये चन्द कलिमात (शब्द) ना होते जिन्को मे पाबन्दी से पढता हू तो यहूदी लोग मुझे गधा बना देते."

गधा बना देने का लफ्ज़ अपने असली मायनो मे नही बल्की बेवकूफ बनाने के मायने मे भी हो सकता हे, मगर बिना ज़रूरत हकीकत को छोडकर दूसरे मायने मुराद लेना सही नही, इस्लीये असली और ज़ाहिरी मफ्हुम इस्का यही हे कि अगर मे ये कलिमात रोजाना पाबन्दी से ना पढता तो यहूदी जादूगर मुझे गधा बना देते.

इस्से दो बाते साबित हुई- पेहली ये कि जादू के ज़रिये इन्सान को गधा बना देने की संभावना हे, दूसरे ये कि जो कलिमात (दुआ के शब्द) वो पढा करते थे उन्की तासीर ये हे कि कोई जादू असर नही करता.

हज़रत काबे अहबार (रदी.) से जब लोगो ने पूछा कि वे कलिमात क्या थे तो आपने ये कलिमात बतलाये - अउजु बिवज़िहहिल्लाहिल अज़ीमिल्लज़ी लै-स शैउन् अअज़-म मिन्हु व बि-कलिमातिल-लाहित्ताम्मातिल्लती ला युजाविजुहुन्-ना बर्रुन व ला फाजिरून् व बि-अस्माअिल्लाहिल् हुस्ना कुल्लहा मा अलिम्-तु मिन्हा व मा ला अअलम् मिन् शर्रि मा ख-ल-क व ब-र-अ व ज़-र-अ.

तर्जुमाः- "मे अल्लाह अज़ीम की पनाह पकडता हू जिस्से बडा कोई नही और पनाह पकडता हू अल्लाह के कलिमाते ताम्मात की जिन्से कोई नेक व बद इन्सान आगे नही निकल सकता, और पनाह पकडता हू अल्लाह के तमाम अस्मा ए हुस्ना (अच्छे नामो) की जिन्को मे जानता हू और जिन्को नही जानता, हर उस चीज़ के शर (बुरायी) से जिस्को अल्लाह तआला ने पैदा किया और वजूद दिया और फैलाया हे." (मुवत्ता इमाम मालिक)

खुलासा ये हे कि जादू की ये तीनों किस्मे पायी जा सकती हे.